दिनाँक :- 15-07-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ० फारूक आज़म (अतिथि शिक्षक)

स्नातक :- प्रथम खंड (कला)

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

इकाई :- दो

पत्र :- प्रथम

अध्याय :- संगम काल स्त्रोत
तीसरे प्रकार का साहित्य

छठी सदी ई० के लगभग आर्यों का प्रभाव संपूर्ण तमिल भूमि पर देखा गया।
तमिल कवियों ने भी बड़ी-बड़ी कविताएँ लिखनी प्रारंभ कर दी। इन्हे संस्कृत नाम की तरह महाकाव्य से संबोधित किया गया।
इस श्रेणी का प्रथम ग्रंथ शिलपादिकरम है।

इस ग्रंथ का परंपरागत लेखन महान चोल सम्राट करिकाल के पौत्र इलांगोदिगल ने किया

इस महाकाव्य में पुहार के व्यापारी कोवलन तथा कन्नगी की दुर्भाग्य गाथा है। इसमें मदुरा नगर का सुंदर विवरण है। माना जाता है कि कोवलन चेर शासक शेनगुट्टुवन का ही छद्म नाम था। इस रचना को तमिल जनता का राष्ट्रीय काव्य माना गया है। इस ग्रंथ में श्रीलंका के शासक गजबाहु की चर्चा है। माना जाता है कि वह उस समय मौजूद था जिस समय शेनगुट्टुवन के द्वारा कन्नगी के लिये एक मंदिर स्थापित किया जा रहा था।

दूसरा महाकाव्य मणि मेखलई है। इसकी रचना सत्तनार नामक कवि ने की है।

इस ग्रंथ में माधवी और कौशिक से उत्पन्न पुत्री मणिमेखलई तथा राजकुमार उदयकुमारन् के बीच प्रेम संबंधों की चर्चा है। इस ग्रंथ में स्वयं

Scanned with CamScanner

माधवी के द्वारा बौद्ध धर्म ग्रहण किए जाने की चर्चा मिलती है। फिर इसमें नायिका मणिमेखलई अपनी माता कि तरह बौद्ध धर्म ग्रहण कर लेती है। इस ग्रंथ में कापालिक। शैव संन्यासियों की चर्चा मिलती है।

तीसरी महाकाव्य : जीवक चिन्तमणि है। इसका लेखक तिरूतक्कदेवर है। इसमें जीवक जैसे योद्धा के अद्भुत कार्य का वर्णन किया गया है किंतु अंत में वह जैन धर्म ग्रहण कर लेते हैं।

शिलप्पादिकरम और मणिमेखलई बौद्ध धर्म से प्रभावित है।

अन्य रचनाओं में प्रमुख है तिरूवल्लुर का 'कुरल' इस में धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र तथा कामसूत्र का समन्वय मिलता है।

विल्ली पुत्तानार ने तमिल महाभारत की रचना की

ईसा पूर्व दूसरी सदी में सुदूर दक्षिण के लोग उच्च भागों में बसते थे, जो महापाषाण निर्माता कहलाते थे।

Scanned with CamScanner

उनका पता हमें उनकी यथार्थ बस्तियों से नहीं चलता है क्योंकि वे संख्या में कम हैं। बल्कि उनके कब्रों से चलता है जो महापाषाण कहलाती हैं।
महापाषाण लोगों का प्रभाव पूर्वी आंध्र प्रदेश तथा तमिलनाडु क्षेत्र में अधिक था। महापाषाण काल का आरंभ 1000 ईसा पूर्व में हुआ था किंतु कई मामलों में महापाषाणिक अवस्था 500 ईसा पूर्व से 100 ईसा पूर्व तक कायम रही।
दक्षिण में महापाषाण युग की दो विशेषताएँ थी।
① लौह युग से जुड़ा था ② यह काले तथा लाल मृद भांडों के प्रयोग से जुड़ा था।
मौर्य सम्राट अशोक के अभिलेखों में उल्लिखित चोल पांड्य तथा केरल पुत्र शायद मौलिक संस्कृति के उत्तर महापाषाणिक काल के लोग थे।

Scanned with CamScanner

वैसे संगम युग का समय 100 ईसा पूर्व से 250 या 300 ई० माना जाता है

भारत में कृषक बस्तियों के प्रसार की तीन अवस्थाएँ थी

प्रथम अवस्था - इस चरण में पहाड़ी ढलानों पर अविकसित खेती होती थी।

दूसरी अवस्था :- प्रौद्योगिकी में पर्याप्त वृद्धि के साथ हल द्वारा खेती की जाने लगी ! नदी घाटियों में खेतों का प्रसार हुआ !

तीसरी अवस्था :- इसमें गैर कृषक वर्ग का खेती में प्रवेश हुआ इन वर्गों को मौसम प्रबंधकीय क्षमता और कृषि उपकरणों का बेहतर ज्ञान था।

राज्यों का निर्माण : वेंकटम पहाड़ियों और कन्याकुमारी के बीच के भूक्षेत्र को तमिलहम यानि तमिल क्षेत्र कहा जाता है तमिल साहित्य में इस संपूर्ण क्षेत्र को पांच तिणै क्षेत्र का समुच्चय बताया गया है। जैसे - कुरिंजी (पहाड़ वन क्षेत्र), पलै (शुष्क क्षेत्र) मुल्लै (चारागाह क्षेत्र)

मरुदम (नम भूमि) नेयतल (समुद्र तट)।
ये सभी क्षेत्रों चारों तरफ बिखरे थे। भौगोलिक स्थितियों के कारण प्रत्येक तिणै में मनुष्य के जीवन-यापन का तरीका अलग-अलग था। उत्पादन के हिसाब से प्रत्येक तिणै में असमान सामाजिक एंव राजनीतिक व्यवस्था थी जिनमें गोत्रों पर आधारित सरल मुखिया तंत्र से लेकर राजघरानों द्वारा शासित जटिल मुखिया तंत्र का अस्तित्व था।
राजनीतिक समाज का उद्भव : विभिन्न कुलों के मुखिया तंत्र से राजनीतिक समाज का उद्भव माना जाता है। तमिल क्षेत्र में तीन प्रकार के मुखिया तंत्र थे।
किलार - छोटे मुखिया
वेलिर - बड़े मुखिया
वेंतर : सबसे बड़े मुखिया

किलार (छोटे गाँव के मुखिया) क्षेत्र में सगोत्रता का आधिपत्य था। प्रायः उनके आगे गाँव का भी नाम जुड़ा होता है जैसे अरंकुडुर-किलार उरंडर किलार आदि। किलार को बड़े मुखिया के अभियान में साथ देना पड़ता था।

वेलिर (बड़े मुखिया) मुख्यतः पहाड़ी क्षेत्र पर नियंत्रण रखते थे। इनमें से कुछ मैदानी भागों में भी जमे थे। यहाँ के मुखिया मुख्यतः शिकारी प्रमुख होते थे जिसे वेडर कोमानया कुरुवर कोमान या नेडु वेट्टुवन के नाम से जाना जाता था।

बड़े मुखियातंत्र की श्रेणी में चेर, चोल, पांड्य, प्रमुख राज्य थे। इन्हें सम्मिलित रूप से मुवेंदर के नाम से जाना जाता था।

इस समय इन राज्यों की आय का मुख्य साधन लूट मार था। जिसे वे अपने सगोत्रीय जनजातियों में बाँट देते थे।

Scanned with CamScanner